अलंकार

अलंकार की परिभाषा

अलंकार से तात्पर्य – आभूषण

जिस प्रकार आभूषणों के प्रयोग से स्त्री का लावण्य (सौंदर्य) बढ़ जाता है, उसी प्रकार काव्यों में अलंकारों के प्रयोग से काव्यों की शोभा बढ़ जाती है, अर्थात् अलंकारों का प्रयोग काव्य में चमत्कार व प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

इसलिए कहा भी गया है – "अलंकरोति इति अलंकार" अर्थात् जो अलंकृत करे वही अलंकार है।

अलंकारों के भेद-

अलंकारों के मुख्यत: दो भेद माने जाते हैं -

(1) शब्दालंकार

(2) अर्थालंकार

अलंकार के प्रकार - शब्द अलंकार

जब शब्दों के द्वारा काव्य के सौंदर्य में वृद्धि की जाती है, तो उसे शब्दालंकार कहते हैं। शब्द को बदलने से उसकी सुंदरता समाप्त हो जाती है; जैसे –

छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की ।

शब्दालंकार तीन प्रकार के हैं -

(1) अनुप्रास अलंकार

(2) श्लेष अलंकार

(3) यमक अलंकार

1. अनुप्रास अलंकार :- काव्य में जब किसी एक वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, तो उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं। चाहे वह शुरु के वर्ण में हो या अंतिम वर्ण में हो;

जैसे - **चा**रु **च**न्द्र की **चं**चल किरणें खेल रही थीं ज**ल** थ**ल** में।

(यहां 'च' वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।)

अनुप्रास के अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं -

(i) **च**न्दु के **चाचा** ने, **च**न्दु की **चाची** को, **चाँ**दनी **चौ**क में, **चाँ**दी के **च**म्मच से **च**टनी **च**टाई।

(यहाँ 'च' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है।)

(ii) **र**घुपति **रा**घव **रा**जा **रा**म, **प**तित **पा**वन सीता **रा**म।

(यहाँ 'र' व 'प' वर्ण के आवृत्ति बार-बार हुई है।)

(iii) **पी**पल के **पे**ड़ से **पी**ले **प**त्ते **पृ**थ्वी **प**र **प**ड़ रहे हैं।

(यहाँ 'प' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है।)

(iv) '**का**लिंदी **कू**ल **क**दंब **की** डारिन'

(यहाँ क वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है।)

(iv) **सु**रभित **सुं**दर **सु**खद **सु**मन तुम पर खिलते हैं

(यहाँ 'स' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है।)

(v) **त**रनि **त**नुजा **त**ट **त**माल **त**रुवर बहु छाए

(यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है।)

(vi) आया है **कि**स **का**म **को कि**या **कौ**न सा **का**म

भूल गए भगवान **को क**मा रहे धनधाम

(यहाँ 'क' वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है)

(vii) "**ठा**ये **ठो**र **ठा**इन अ**ठा**इन सौ **ठा**नै **ठै**न जाके संग सोह है **ठा**कुर **ठि**काने को।

(यहाँ 'ठ' वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है)

2. यमक अलंकार :- जब किसी काव्य में/वाक्य में एक ही शब्द का प्रयोग एक से अधिक बार हो परन्तु उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हो वहाँ यमक अलंकार होता है;

उदाहरण

ऊँचे छोर मन्दर के अन्दर रहन वारी,

ऊँचे छोर मन्दर के अन्दर रहाती है।

यहाँ पर एक मन्दर का अर्थ गुफा से है और दूसरा अट्टालिका से, इसलिए यहाँ यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण -

(i) तीन बेर खाती थी, वो तीन बेर खाती थीं।

(यहाँ 'बेर' का अर्थ 'बेर (फल)' व 'बारी' से हुआ है।)

(ii) कनक-कनक ते सौ गुना मादकता अधिकाय

या खाये बौराय जग, वा पाये बौराय।

(यहाँ एक कनक का अर्थ, 'धतूरा' व दूसरे कनक का अर्थ 'सोना' से हुआ है। (धतूरा खाकर व सोना पाकर लोग पागल हो जाते हैं।) यहाँ यमक अलंकार है।

3. श्लेष अलंकार :- श्लेष का शाब्दिक अर्थ है - चिपकना। जहाँ एक ही शब्द इस्तेमाल (प्रयुक्त) किया जाए पर उस शब्द के अर्थ हर जगह अलग - अलग हो, अर्थात् एक ही शब्द में कई अर्थ होते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है -

पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।

यहाँ पानी शब्द एक ही बार प्रयुक्त (इस्तेमाल) हुआ है परन्तु उसके तीन भिन्न अर्थ निकलते है।

एक पानी का अर्थ चमक,

दूसरे पानी का अर्थ इज़्ज़त (सम्मान)

तीसरे पानी का अर्थ जल (पानी)

से लिया गया है इसलिए यहाँ श्लेष अलंकार है।

अन्य उदाहरण -

(i) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

जा तन की झांई परै, स्याम हरित दुति होय।।

यहाँ हरित शब्द के तीन अर्थ निकलते है :- हर्षित होना (खुश होना) हर लेना (चुरा लेना) व हरा रंग का होना इसलिए यहाँ श्लेष अलंकार है।

(ii) चरन धरत चिंता करत चितवत चहुँ ओर।

सुबरन को ढूँढ़त फिरत कवि, व्यभिचारी चोर

यहाँ सुबरन के तीन अर्थ हैं (1) अच्छे शब्द (सुवर्ण) (2) अच्छा रुपरंग (3) स्वर्ण (सोना)

(iii) को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के वीर।

वृषभानुजा (बैल की बहिन गाय, राधा)

(iv) जो रहीम गति दीप को कुल कपूत गति सोय

बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरों होय

(बारे = बचपन में, जलाने पर, बढ़े = बड़ा होने पर, बुझने पर)

अलंकार के प्रकार - अर्थ अलंकार

कथन में जब अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है, अर्थात् काव्य-सौंदर्य में चमत्कार अर्थ के द्वारा होता है शब्द के द्वारा नहीं, उसे अर्थालंकार कहते हैं।

अर्थालंकार की परिभाषा:-

कथन में जब अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है, अर्थात् काव्य-सौंदर्य में चमत्कार अर्थ के द्वारा होता है शब्द के द्वारा नहीं, उसे अर्थालंकार कहते हैं।

अर्थालंकार इस प्रकार है :-

(1) उपमा

(2) रुपक

(3) उत्प्रेक्षा

(4) अतिश्योक्ति

(5) अन्योक्ति

(6) मानवीकरण

(7) पुनरुक्ति प्रकाश

(1) उपमा :- जब किन्हीं दो अलग-अलग व्यक्तियों या वस्तुओं में तुलना की जाती है, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा के चार अंग होते हैं -

(i) उपमेय :- जिसकी उपमा दी जाए।

किसी व्यक्ति व वस्तु, जिसका वर्णन किया जाता है, उपमेय कहलाता है। जिसके सम्बन्ध में बात की जाए या उसको किसी अन्य के समान बताया जाए, वह उपमेय है।

जैसे - चाँद सा सुंदर मुख (मुख उपमेय है)

(ii) उपमान :-

उपमेय कि समानता किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु सी की जाए, उसे उपमेय के समान बताया जाए वह उपमान होता है; जैसे - चाँद सा सुंदर मुख (चाँद उपमान है)

(iii) वाचक शब्द :-

जिस शब्द के द्वारा उपमेय व उपमान में समानता दर्शाया (बताया) जाता है, उसे वाचक शब्द कहते हैं। जिन शब्दों से उपमा अलंकार की पहचान हो; जैसे - सा, सी, सम, जैसा, सरिस, तुल्य आदि।

(iv) साधारण धर्म :-

जहाँ उपमेय व उपमान में गुण-रुप समान पाए जाते हैं, उसे साधारण धर्म कहते हैं; जैसे - चाँद सा सुंदर मुख। यहाँ सुंदर चाँद के लिए भी है और मुख के लिए भी।

उदाहरण :-

(क) राधा बदन चन्द्र सो सुंदर

(यहाँ राधा जी के शरीर की तुलना चंद्र से की है, इसलिए यहाँ उपमा अलंकार हैं।)

(ख) मखमल के झूल पड़े हाथी सा ढ़ीला

(ग) पूजा की जैसी

हर माँ की ममता है।

(यहाँ माँ की ममता की तुलना पूजा से की है।)

(घ) माँ की लोरी में

मुरली सा जादू है।

(यहाँ माँ की लोरी की तुलना मुरली की धुन से की गई है, इसलिए यहाँ उपमा अलंकार है।)

(1) हरिपद कोमल कमल से

(2) यह देखिए, अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे

(3) पीपर पात सरिस मन डोला

(4) मुख बाल-रवि-सम लाल होकर ज्वाल सा बोधित हुआ

(2) रुपक अलंकार :- जहाँ रुप और गुण को बहुत अधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान का आरोपित कर दिया जाए, वहाँ रुपक अलंकार होता है। अर्थात् जिसकी उपमा दी जाए उसको जो उपमा दी जा रही है वैसा ही मान लिया जाए।

(क) चरण-कमल बंदौ हरिराई।

(यहाँ चरण को कमल के समान मान लिया है।)

(ख) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

(राम को रत्न रुपी धन माना है।)

(ग) मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।

(चन्द्रमा को खिलौना माना है।)

(घ) उदित उदयगिरी मंच पर, रघुवर बाल पतंग

(उदयगिरि को मंच और रघुवर को सूर्य (बाल पतंग) माना है।)

(3) उत्प्रेक्षा अलंकार :- जिसको उपमा दी जा रही है, जिसकी उपमा दी जा रही है उसकी कल्पना कर ली जाती है। इसको पहचानने के लिए इसमें आए शब्द
हैं - मनो, मानो, जानो, जनु, मनहु, मनु, जानहु, ज्यों, त्यों आदि इसमें केवल माना जाता है;

जैसे -

(क) सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।

मनहुँ नील मणि सैल पर, आतप परयौ प्रभात।।

(इसमें श्री कृष्ण के शरीर को नीलमणि पर्वत और उनके वस्त्र को सुबह की धूप की तरह कल्पना की गई है कि मानो वे ऐसे हैं।)

(ख) उस काल क्रोध के तनु काँपने लगा

मानो हवा के ज़ोर से सोता हुआ सागर जागा

(इसमें अर्जुन के क्रोध से उसके शरीर में आए कंपन को सागर में आए तूफान की संभावना की गई है।)

(ग) जरा-से लाल केसर से कि जैसे धूल हो गई।

(घ) ले चला मैं तुझे कनक, ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण झनक।

(ङ) पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के,

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

अतिश्योक्ति अलंकार :-

जहाँ वस्तु पदार्थ अथवा कथन को हम बढ़ा-चढ़ा कर कहते हैं, तो वह अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

1. आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार

राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पर

(राणा अभी सोच ही रहे थे कि घोड़े ने नदी पार कर ली।)

2. हनुमान की पूँछ में, लग न पाई आग।

लंका सारी जल गई, गए निसाचर भाग।।

(हनुमान की पूँछ में आग लगने से पहले ही लंका जल गई।)

(3) वह शर इधर गाँडीव गुण से भिन्न जैसे ही हुआ,

धड़ से जयद्रथ का इधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।

(अर्जुन का तीर अभी धनुष पर चढ़ा ही था, जयद्रथ का सिर धड़ से अलग हो गया।)

(4) चंचल स्नान कर आए चंद्रिका पर्व में जैसे,

उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसे।

(नायिका के रुप सौंदर्य का वर्णन बढ़ा-चढ़ा कर किया गया है।)

मानवीकरण अलंकार :- जहाँ प्रकृति को मनुष्य रुप में मान लिया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है;

जैसे -

(क) अंबर घट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी।

(सुबह) 'उषा' को 'नगर' माना गया है।

(ख) मेघ आए बड़े बन ठन के सँवर के।

(ग) मेघमय आसमान से उतर रही

संध्या सुंदरी परी-सी धीरे-धीरे।

<u>अन्योक्ति अलंकार</u>:-

इसमें अन्य + उक्ति कही जाती है, अर्थात जो है उसको किसी अन्य के बारे में कहकर समझाया जाए या व्यंग किया जाए तो, अन्योक्ति अलंकार कहते हैं;

जैसै -

1. जिन दिन देखे वे कुसुम गई सुबीति बहार

अब अलि रही गुलाब में अपत कँटीली डार

इसमें भौरे (अलि) के माध्यम से किसी विद्वान व्यक्ति और उसको सहारा देने वाले का वर्णन किया है कि आश्रयदाता अब गुलाब के बिना पतझड़ का पेड़ हो गया है।

2. नहि पराग नहि मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।

अली कली ही सो बंध्यो आगे कौन हवाल।।

(इसमें भौरे को बुरा भला कह कर राजा जयसिंह को उनकी रानी के साथ समय बिताने और राजकाज का काम न देखने पर व्यंग्य किया गया है।)

3. स्वारथ सुकृत न स्रम बृथा देखि बिहंग विचारि।

बाज पराए पानि परि, तू पच्छीनु न मारि।।

(यहाँ 'बाज' राजा जयसिंह 'पच्छीनु' हिंदु राजाओं और 'पराए पानि' को कहा गया है। इसमें व्यंग्य है कि पराए शिकारी के कहने पर अपने ही बंधुओं को मत मार।)

पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार:- इस अलंकार में एक ही शब्द की उसी अर्थ में पुनः आवृत्ति होती है। अर्थात एक ही शब्द एक से अधिक बार आता है परन्तु हर बार उसका अर्थ वही रहता है। इसलिए इसे पुनरुक्ति प्रकाश अंलकार कहते हैं। जैसे-

1. प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

ऊपर दिए काव्यांश में अँग शब्द की दो बार उसी रूप में आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

2. इन नए बसते इलाकों में

जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए-नए मकान

मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ

ऊपर दिए काव्यांश में नए शब्द की दो बार उसी रूप में आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

अलंकारों में अंतर

यमक और श्लेष में अंतर :- यमक में एक शब्द का अलग-अलग अर्थ में एक से अधिक बार प्रयोग होता है जबकि श्लेष अलंकार में एक शब्द एक बार प्रयोग होता है, लेकिन हर संदर्भ से भिन्न अर्थ देता है।

यमक – कनक-कनक तै सौगुनी मादकता अधिकाय।

वा खाए बौराय, या पाए बौराय।।

श्लेष -

(1) रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै मोती मानुस चून।।

उपमा और उत्प्रेक्षा:-

उपमा अलंकार में किसी प्राणी या वस्तु का मिलता जुलता रुप दिखने पर उस चीज़ से तुलना की जाती है और उत्प्रेक्षा उस वस्तु की केवल कल्पना या संभावना की जाती है;

जैसे -

उपमा – उसकी आँखें कमलदल के समान है।

उत्प्रेक्षा – उसकी आँखें मानो कमल हैं।

उपमा व रुपक:- रुपक में अत्यंत समानता होती है, जिसका उदाहरण जिसको दिया जाता है अर्थात् उपमेय और उपमान में कोई अंतर नहीं रहता (एक मानते हैं), जबकि उपमा में समानता दिखाने के लिए माना जाता है।

जैसे - उपमा – उसके चरण कमल के समान सुंदर हैं।

रुपक – उसके चरण कमल पर बारि।